हमारा हिमाचल

प्रेरणा प्लस

प्राथमिक कक्षाओं के लिए अधिगम संवृद्धि कार्यक्रम

(Learning Enhancement Programme for Primary Classes)

हिमाचल प्रदेश सरकार

हिमाचल प्रदेश सरकार की एक नई पहल

2017-18

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

नाम .... पिता/माता का नाम ....

स्कूल का नाम .... कक्षा ....

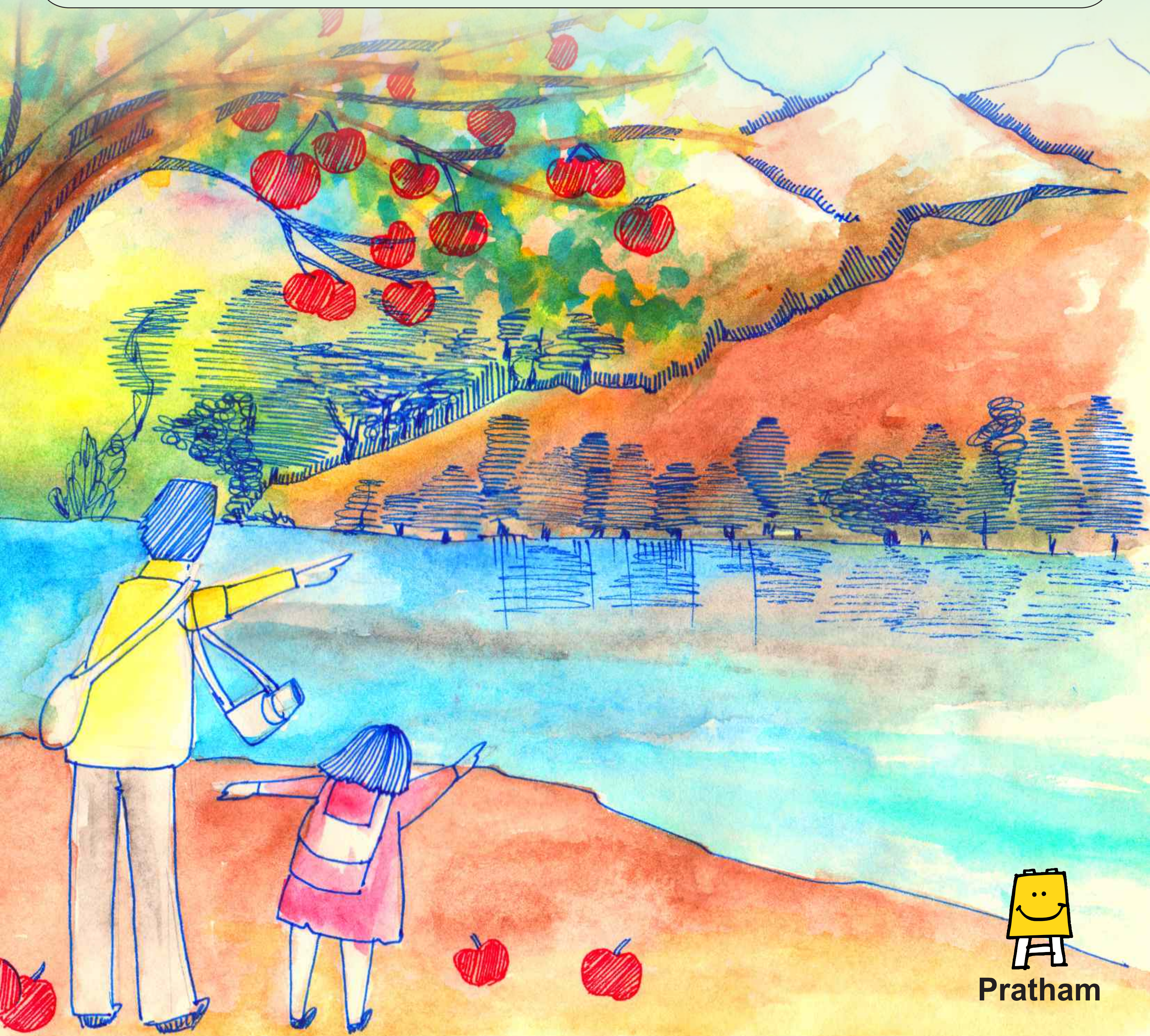

Pratham

फूल

छोटा-सा फूल। लाल रंग का फूल। उसकी हरी-हरी पत्तियाँ। चमकती हुई हरी-हरी पत्तियाँ। सुबह होते ही फूल खिल जाता। धूप निकलने पर मुस्कराने लगता। बारिश जब होती तो बारिश की बूँदों में नहाना उसे अच्छा लगता। दिन भर उसकी पंखुड़ियों पर मधुमक्खियाँ भिनभिनाती रहतीं। तितलियाँ इतरातीं, फूलों पर मँडरातीं और रस चूसतीं। तेज़ हवा से कभी-कभी उसकी कुछ पत्तियाँ बिखर जातीं।

कभी-कभी तेज़ धूप उसे बेचैन कर जाती। तेज़ धूप से वह मुरझा जाता। लेकिन अगली सुबह फिर से तरोताज़ा हो जाता। वह हमेशा मुस्कराता रहता। उसे देखकर देखने वालों के चेहरे भी खिल उठते।

लेखन : दलीप सिंह (मण्डी)
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

आख़री बूँद

बारिश अभी-अभी रुकी थी। मौसम ख़ुशगवार था। चिड़िया चहचहाने लगी थीं। मैं खिड़की से बाहर झाँक रही थी। मेरी नज़र कपड़े सुखाने वाले तार पर पड़ी। उस तार पर एक चिड़िया बैठी थी। वह चिड़िया किसी चीज़ को बड़े ग़ौर से देख रही थी। मैंने उसकी नज़र का पीछा किया। मेरी नज़र तार से लटक रही पानी की बूँद पर पड़ी। वह चिड़िया उस बूँद को कुछ देर तक देखती रही। पानी की आख़री बूँद गिरने ही वाली थी। इससे पहले कि वह बूँद गिरती, चिड़िया ने उस बूँद को अपनी चोंच में डाल लिया।

लेखन : फ़ैयाज़ अहमद
चित्रांकन : राजीव बंजारा

चिड़ियाघर की सैर

पल्लवी शिमला घूमने गई। उसे शिमला जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। उसका मानना था कि यहाँ देखने लायक़ कुछ भी नहीं है। चाचाजी सबसे पहले उसे कुफ़री ले गए। यहाँ बहुत लोग सैर करने आते हैं। यह शिमला के पास है। चिड़ियाघर में देश-विदेश से लाए रंग-बिरंगे पक्षी हैं। उसने वहाँ बहुत से पक्षी देखे। कोयल, पपीहा, बुलबुल, तोता, कबूतर, तीतर। जंगली मुर्गा तो यहाँ उसने पहली बार देखी। हरे-नीले रंगों वाली चिड़िया देखी। वह चिड़िया बहुत सुंदर थी। उसने बंदर, भालू, भेड़िया, ख़रगोश, बारहसिंघा और जंगली बिल्ली भी देखी। तभी उसकी नज़र घनी झाड़ियों पर पड़ी। झाड़ियों के बीच उसने शेर को देखा। यह देखकर पल्लवी ख़ुशी से उछल पड़ी। अब शिमला उसकी सबसे पसंदीदा जगह है।

लेखन : ख़ुशहाल नेगी (कुल्लू)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

पौधशाला

एक दिन रोशन गाय चराने जंगल गया। वहाँ एक पौधशाला थी । उस पौधशाला में तरह-तरह के पेड़-पौधे थे । सेब, प्लम, आड़ू, बादाम और खुबानी के पौधे की पौधशाला थी। गाय घास चरते-चरते पौधशाला में चली गई। रोशन डर गया। वह झट से पौधशाला से गाय को निकाल लाया। लेकिन रोशन देखना चाहता था कि पौधशाला में क्या है? उसने इसके बारे में चौकीदार से पूछा। चौकीदार ने उसे बताया कि इसे नर्सरी यानी पौधशाला कहते हैं। रोशन को बड़ी हैरानी हुई। वह सोचने लगा कि पौधों को भी पढ़ाया जाता है भला! पेड़ पढ़ लिखकर क्या करते होंगे? उसके मन में बहुत सारे सवाल थे। अगले दिन जब वह स्कूल पहुँचा तो शिक्षक ने पूछा - कल तुम क्यों नहीं आए थे? रोशन ने बड़ी शान से जवाब दिया - कल मैं पेड़-पौधों के स्कूल गया था!

लेखन : पुरुषोत्तम ठाकुर (प्रथम, कुल्लू)
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

रेलगाड़ी

मैं हूँ रेलगाड़ी। शिमला से कालका तक आती-जाती हूँ। लोग मुझे टॉय ट्रेन कहते हैं। मैं बहुत ही छोटी हूँ। मेरी रफ़्तार भी कम है। लेकिन लोग दूर-दूर से मेरी सवारी करने आते हैं। मैं सब को सैर कराती हूँ। मेरा सफ़र बहुत मज़ेदार है। मैं हर रोज़ छोटी-बड़ी 103 सुरंगों से गुज़रती हूँ। एक सुरंग तो इतनी बड़ी है जितनी मेरी लम्बाई भी नहीं। जब मैं सुरंगों से गुज़रती हूँ तो लोग ख़ुशी के मारे चिल्ला उठते हैं। मैं जहाँ-जहाँ से गुज़रती हूँ, हर तरफ़ हराभरा नज़र आता है। लोग हरियाली देख कर बहुत ख़ुश होते हैं। पहले मैं भी ख़ुश होती थी। पर अब मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। कुछ लोग यहाँ की सुंदरता ख़राब कर रहे हैं। पोलीथीन, कागज़ के टुकड़े और रैपर इधर-उधर फेंक देते हैं। सुंदरता की जगह अब गंदगी ने ले ली है। आप लोग कुछ कीजिए और इस राज्य को हरा भरा ही रहने दीजिए।

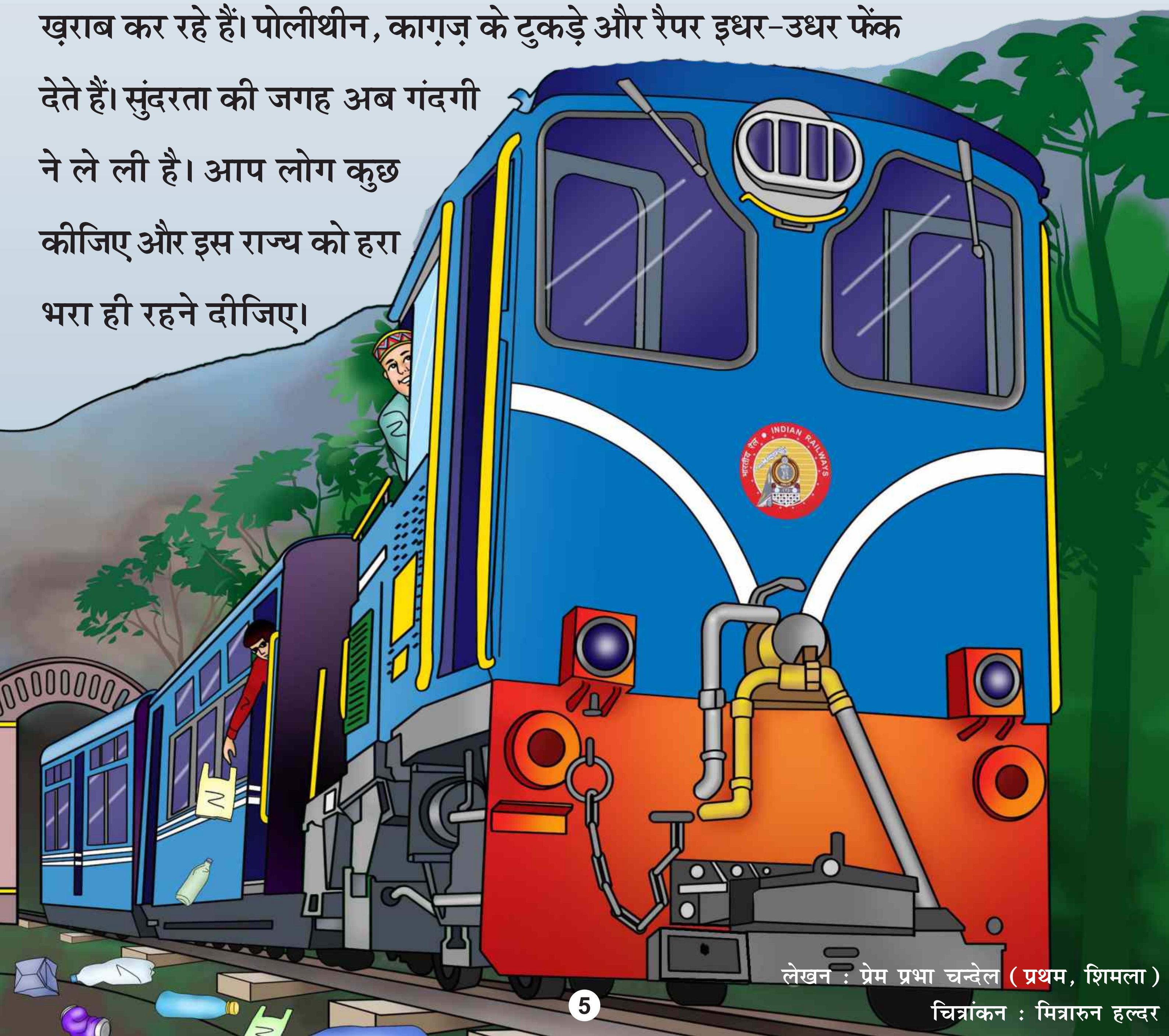

लेखन : प्रेम प्रभा चन्देल (प्रथम, शिमला)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

अनोखी होली

गली के कोने पर एक बड़ा-सा घर था। उसका नाम था 'अपना घर'। उस घर में केवल बूढ़े-बुज़ुर्ग ही रहते थे। एक दिन बच्चों ने तय किया कि इस बार होली उनके साथ मनाई जाए। बाज़ार के रंगों के साथ नहीं बल्कि ख़ुद के बनाए रंगों के साथ ताकि किसी को नुकसान न पहुँचे। सभी ने फूल-पत्तियाँ और कुछ सब्ज़ियाँ इकट्ठी की। इन सभी चीज़ों को पीस कर घोल बनाया।

होली का दिन आ गया। बूढ़े-बुज़ुर्ग भी बच्चों के साथ बच्चे बन बैठे। सबने ख़ूब मस्ती की। इतनी मस्ती कि भूख लगने लगी। तरह-तरह के पकवान परोसे गए। लेकिन गुजिया खाने के अलग ही मज़े थे। खाते समय सबने अपने - अपने बचपन की कहानी सुनाई। उन सब की यह अनोखी होली थी।

लेखन : जोगिन्दर शर्मा (ठियोग, शिमला)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

सर्दी की रात

सर्दियों की रात थी। सभी लोग अपने-अपने घरों में गहरी नींद में सोए हुए थे। तभी डोल्मा का कुत्ता टाइगर ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। डोल्मा की आँख खुल गई। उसने बाहर निकलकर देखा। गाँव में आग लग गई थी।

आग तेज़ी से फैल रही थी। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी - आग लगी है! आग लगी है! गाँव के सभी लोग घरों से बाहर निकल आए। सभी ने मिलकर आग बुझाई। टाइगर की वजह से लोगों की जान बच गई। टाइगर अब सभी गाँव वालों का चहेता बन गया।

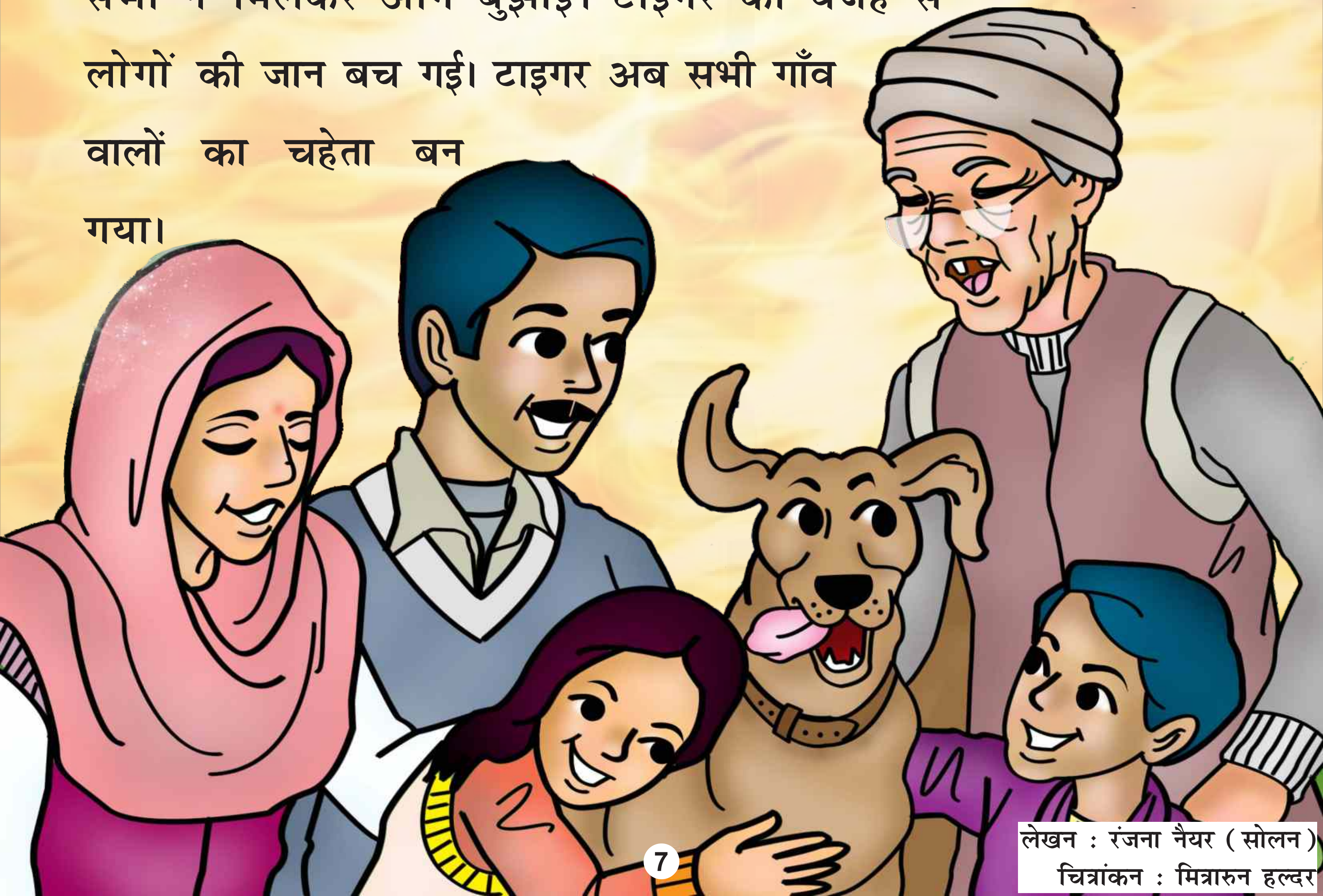

लेखन : रंजना नैयर (सोलन)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

आज बहुत ठंड है

सुबह बहुत ठंड थी। घना कोहरा भी था। छुट्टी के बाद स्कूल खुलने वाला था। चुनमुन अभी भी सोना चाहती थी। उसका उठने का मन नहीं कर रहा था। माँ ने आवाज़ भी नहीं लगाई। पता नहीं माँ ने क्यों नहीं जगाया? चुनमुन ने सोचा लगता है माँ भूल गई है। कुछ देर और सो लिया जाए। थोड़ी देर बाद चुनमुन को लगा कि अब तो देर हो ही जाएगी। ख़ुद ही उठ जाना चाहिए। आँख मलते हुए चुनमुन माँ के पास दूसरे कमरे में पहुँची। उसने बड़ी मासूमियत से माँ से पूछा - आज आपने जगाया क्यों नहीं? माँ ने प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा - दो दिन छुट्टी बढ़ गई है। फिर क्या था चुनमुन दुबक गई फिर से रज़ाई में।

लेखन : रिचा चिंतन
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

खौं-खौं बंदर

गाँव में पक्की सड़क बन रही थी। सड़क बनाने के लिए बड़ी-बड़ी मशीनें लाई गईं। मशीनें दिन रात चल रही थीं। गाँव के पास ही एक छोटा-सा जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे बंदर थे। मज़दूर जब आराम करते तब बंदर मशीनों पर उछल-कूद करने लगते। उन बंदरों में एक छोटा बंदर था। उसका नाम 'खौं-खौं' था। एक दिन जब वह उछल-कूद कर रहा था, मशीन में उसकी पूँछ फँस गई। खौं-खौं ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।

मज़दूर दौड़े-दौड़े आए। वह ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। मज़दूर ने मशीन बंद कर दी। उसने सावधानी से उसकी पूँछ को बाहर निकाला। पूँछ बाहर निकलते ही बंदर जंगल की ओर भाग गया।

लेखन : खुशहाल नेगी (कुल्लू)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

हिमाचल की झलक

हिमाचल एक ख़ूबसूरत प्रदेश है। यह पहाड़ों और पेड़-पौधों से भरा है। शिमला इसकी राजधानी है। दूर देश से लोग यहाँ घूमने आते हैं। यहाँ अक्सर बर्फ़ पड़ती है। जब बर्फ़ पड़ती है तो ऐसा लगता है मानो सफ़ेद चादर बिछी हो। लाहौल स्पीति और किन्नौर में तो सर्दी के मौसम में रास्ता ही बंद हो जाता है। कुफ़री, नालदेहरा और दूसरी जगहों पर लोग बर्फ़ से खेलने जाते हैं। जाखु, हाटकोटी और भीमा काली मंदिर के दर्शन के लिए भी लोग आते हैं। कुल्लू-मनाली की अपनी अलग ही पहचान है। यहाँ चारों तरफ़ सेब के बाग़ान हैं। यहाँ का दशहरा दुनिया भर में मशहूर है। मनीकर्ण में उबलते पानी के चश्मे हैं। हिमाचल में बहुत सारी झीलें हैं। उनमें रेणुका, खजियार, रिवालसर, पराशर, चन्द्रताल और नाको आदि जगहें देखने लायक़ हैं। बिलासपुर में गोबिंद सागर झील सतलुज नदी पर बनी है। यह मानव रचित सबसे बड़ी झील है। देश-विदेश से लोग यहाँ घूमने आते हैं।

लेखन : ख़ुशहाल नेगी (कुल्लू)

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

बादाम का कमाल

फ़रिक बहुत बातूनी है। वह चार साल का है। लेकिन बात बड़ों जैसी करता है। एक शाम उसके चाचा उससे मिलने गए। चाचा को देखते वह उछल पड़ा। वह बोला– चाचू बादाम खाने से दिमाग़ तेज़ होता है। उसके चाचा ने पूछा – यह बात आपको किसने बताई? उसके चाचा को लगा था कि शायद उसकी बड़ी बहन ने सिखाया होगा। लेकिन ऐसा नहीं था। वह बोला – बहुत ही आसान है। मैं आपको समझाता हूँ।

दीवार पर बारहखड़ी चार्ट टंगी थी। 'बारहखड़ी' शब्द को दिखाते हुए वह बोला – इसमें से पहले 'र' निकालो फिर 'ब' और फिर 'ड़'। अब तीनों को मिलाओ। लो बन गया न 'रबड़'। कितना आसान है। इसलिए कहता हूँ बादाम खाने से दिमाग तेज़ होता है। यह सुनकर सभी हँस पड़े।

लेखन : फ़ैयाज़ अहमद
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

तितली का तोहफ़ा

कासनी बाग़ में खेल रही थी। साथ में उसके दोस्त भी थे। सारे बच्चे इधर-उधर भाग रहे थे। अचानक उन्हें तितली नज़र आई। वह भी हवा में दौड़ रही थी। तितली के पंख बहुत सुंदर थे। लाल-लाल पंखों पर नीली-नीली धारियाँ थीं। बच्चे तितली के पीछे भागने लगे। तितली दाएँ जाती तो बच्चे भी दाएँ जाते। तितली बाएँ जाती तो बच्चे भी बाएँ जाते। यह खेल बहुत देर तक चलता रहा। आख़िर में तितली एक फूल पर जाकर बैठ गई। सारे बच्चे भी सुस्ताने लगे। कासनी ने धीरे-धीरे क़दम तितली की ओर बढ़ाया और झट से उसे चुटकी से पकड़ लिया। तितली पंख फड़फड़ाने लगी। सारे बच्चे चिल्लाए - छोड़ दो, उसे छोड़ दो। कासनी ने उसे तुरंत छोड़ दिया। तितली आकाश में उड़ गई। सारे बच्चे ताली बजाने लगे। कासनी ने अपनी अँगुलियों की ओर देखा। वहाँ तितली के पंखों के रंग उतर आये थे। लाल और नीले रंग। कासनी खुश हो गई। उसके लिए यह तितली का तोहफ़ा था।

लेखन : शाहिद अनवर

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

टीलू ख़रगोश

एक छोटा-सा ख़रगोश था। उसका नाम टीलू था। एक दोपहर टीलू को ज़ोर की भूख लगी। टीलू पास के खेत में घुस गया। खेत में गाजर लगी हुई थी। वह गाजर की हरी-हरी पत्तियाँ खाने लगा। थोड़ी ही दूरी पर कालू कुत्ता बैठा सुस्ता रहा था। टीलू की नज़र कालू पर पड़ी। टीलू उसे देखकर डर गया। वह 'माँ माँ' चिल्लाने लगा। उसकी माँ एक छलाँग में वहाँ पहुँच गई। टीलू को ख़तरे में देखकर वह कालू पर झपट पड़ी। दोनों में ख़ूब लड़ाई हुई। मौक़ा देखकर टीलू ने कालू की दुम काट ली। कालू से दर्द बर्दाश्त नहीं हुआ । वह डर कर भाग गया। टीलू अपनी माँ से लिपट गया।

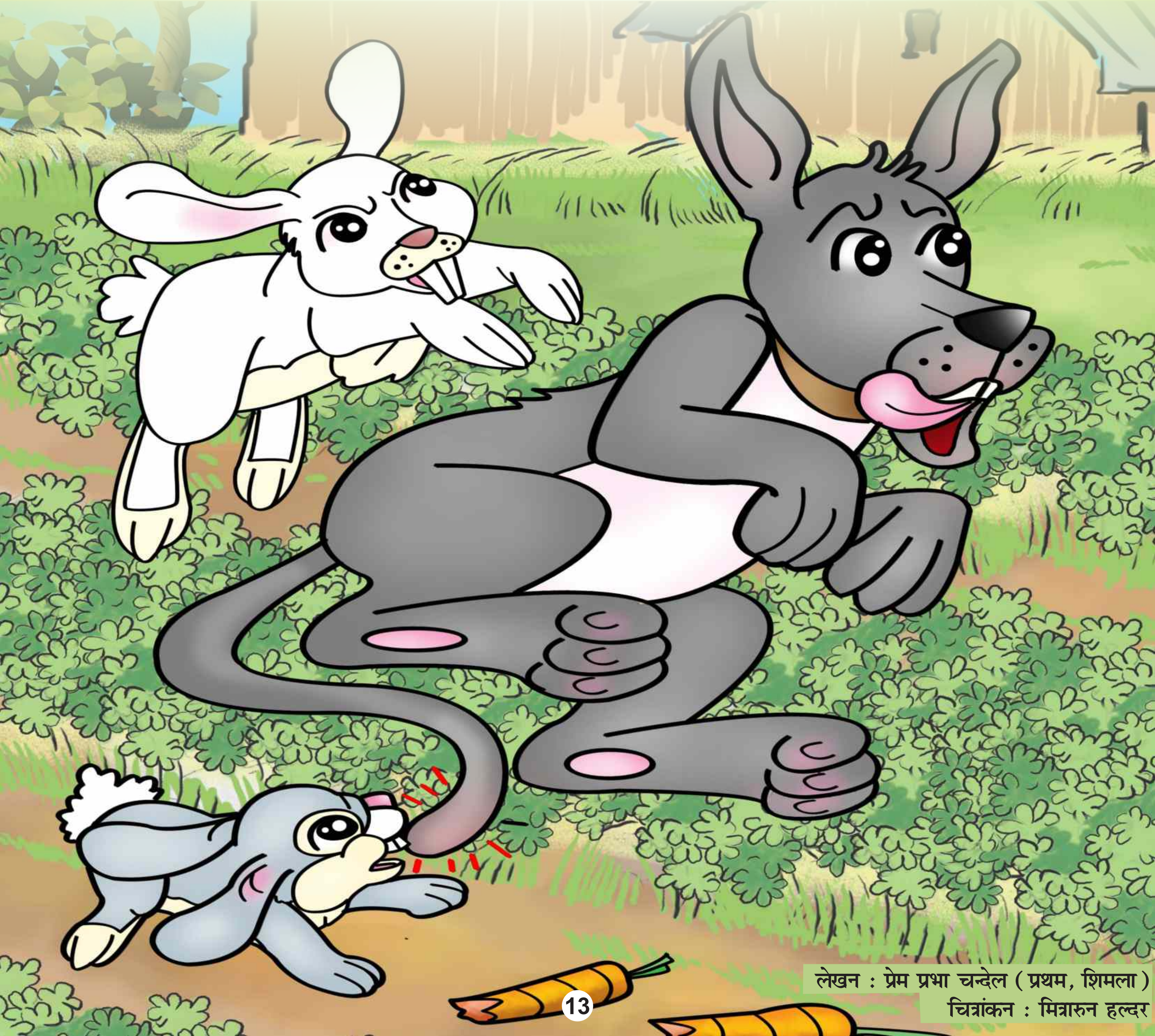

लेखन : प्रेम प्रभा चन्देल (प्रथम, शिमला)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

प्यारी चिड़िया

विमल और शगुन स्कूल से घर लौट रहे थे। तभी एक चिड़िया उनके पैरों के पास आ गिरी। दोनों बच्चे उसकी तरफ़ दौड़े। चिड़िया ने अपने पंख फड़फड़ाए। उसने उड़ने की कई बार कोशिश की, पर वह उड़ नहीं पाई। तभी विमल बोला – इसे चोट लगी है, ख़ून भी निकल रहा है। चलो इसे घर ले चलते हैं।

दोनों चिड़िया को घर ले आए। उन्होंने उसे पानी पिलाया। दाना खिलाया। उसके पंखों पर मरहम लगाया। तीन दिन में चिड़िया ठीक हो गई। वह उड़कर पेड़ की डाल पर जा बैठी। उनको उड़ता देख विमल और शगुन को बहुत ख़ुशी हुई।

लेखन : ख़ुशहाल नेगी (कुल्लू)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

बंदरों से पंगा

आरव एक दिन बाज़ार जा रहा था। रास्ते में उसे एक बंदर दिखा। बंदर पेड़ पर बैठा केले खा रहा था। तभी वहाँ कुछ बच्चे पहुँच गए। बंदर को देखकर उन्हें एक शरारत सूझी। बच्चे बंदर को चिढ़ाने लगे। आरव ने बच्चों को ऐसा करने से मना किया। बच्चे नहीं माने। वे आरव का मज़ाक उड़ाने लगे। एक बच्चा सीना तान कर आगे बढ़ा। उसने एक पत्थर बंदर की तरफ़ फेंका। बंदर ने 'खों खों' करते हुए दूसरे पेड़ पर छलाँग लगाई। अचानक 'खों खों' की आवाज़ें चारों ओर गूँजने लगीं। बंदरों का एक बड़ा झुण्ड वहाँ पहुँच गया। झुण्ड ने बच्चों पर हमला कर दिया। बच्चे डर गए। आरव तब तक आसपास के लोगों को बुला लाया था। लोगों ने बड़ी मुश्किल से बंदरों को क़ाबू में किया। बच्चों ने राहत की साँस ली। बच्चों ने अपनी शरारत पर सबसे माफ़ी माँगी।

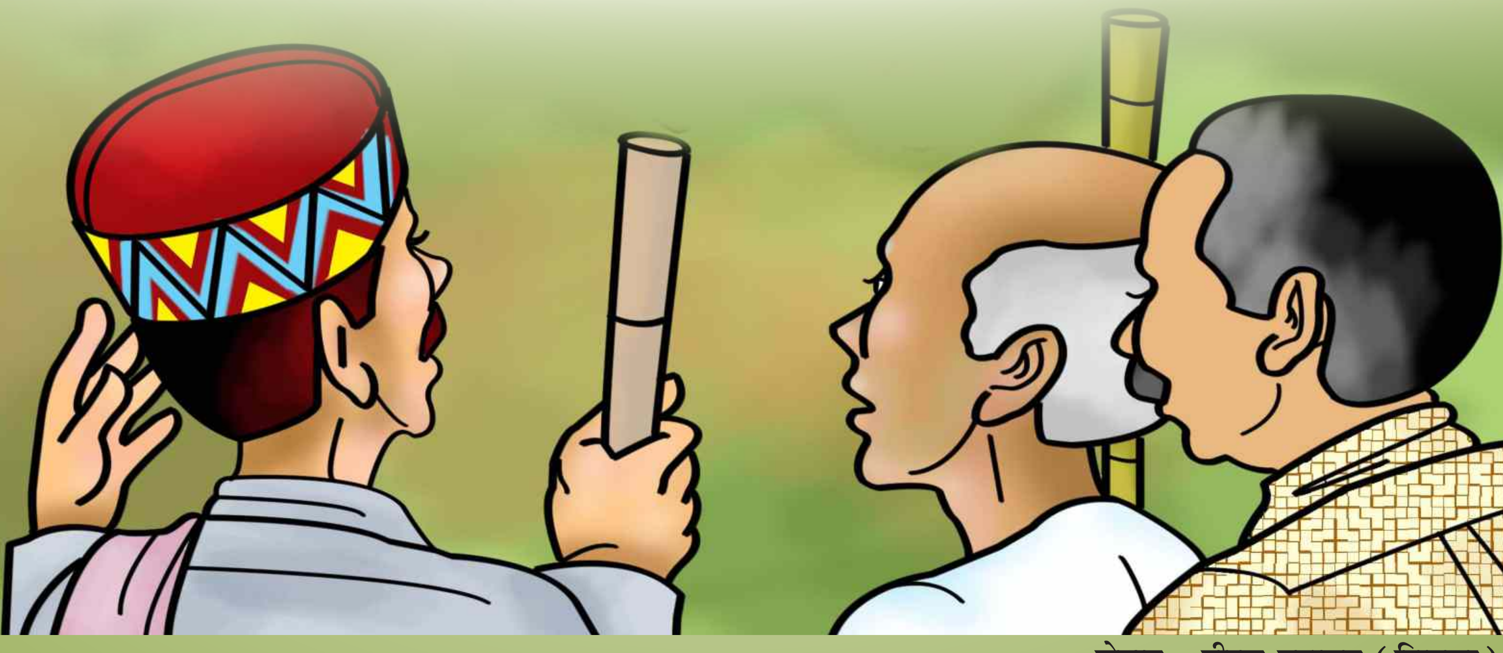

लेखन : नीरज महाजन (शिमला)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

सोनू की चाँद पर सैर

दादी हमेशा सोनू को कहानियाँ सुनाया करती। चाँद की कहानियाँ। सोनू को चाँद की कहानियाँ बहुत पसंद थीं। कहानी सुनते-सुनते वह सो जाता। सपनों में खो जाता और चाँद पर चला जाता। चाँद से ख़ूब बातें करता। एक दिन सोनू ने चाँद से बोला - आज मैं बहुत थक गया हूँ। मैं सोने जा रहा हूँ। तभी वहाँ कोई आया। उसने अलग तरह के कपड़े पहने हुए थे। सोनू को उसका पहनावा अजीब लगा। उसने अपना नाम नील आर्मस्ट्रांग बताया। उसने सोनू को अपने जैसे कपड़े पहना दिए। कपड़े पहनकर सोनू उड़ने लगा। उसका वज़न कम होने लगा। वह ख़ुशी से चिल्लाया। उसे लगा वह तेज़ी से नीचे गिर रहा है। वह पसीने से नहा गया। तभी उसकी आँख खुल गई। उसने ख़ुद को बिस्तर पर पाया।

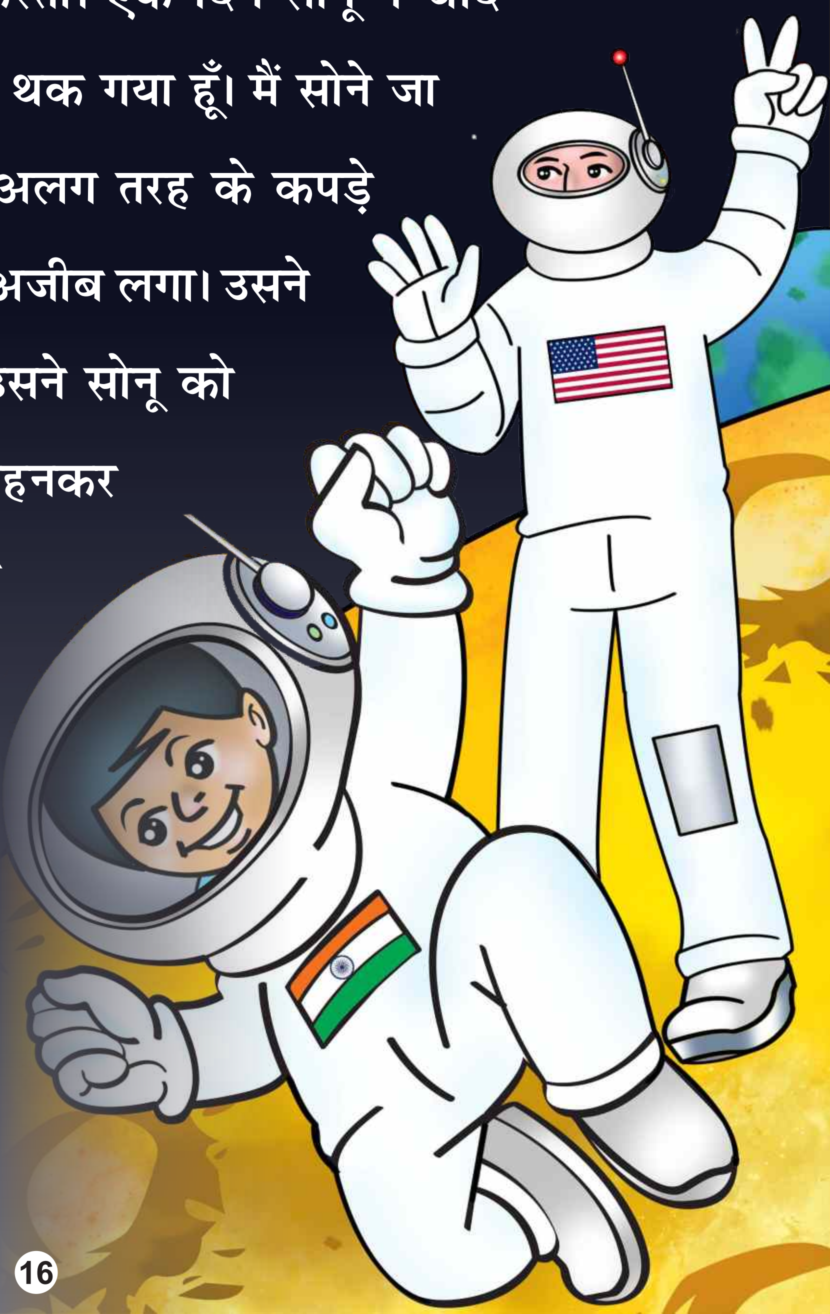

लेखन : सोनम नेगी (किन्नौर)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

सलमा का जन्मदिन

आज सलमा का जन्मदिन है। वह सुबह जल्दी उठी। उठते ही वह फ़ोन पर विडियो गेम खेलने लगी। चाची का फ़ोन आया। उसे पता ही नहीं चला। उसकी दोस्त गीता ने भी फ़ोन करके बधाई देना चाहा। मगर सलमा को पता ही नहीं चला। सलमा के दोस्त उससे मिलने आए। मगर सलमा खेल में ही मग्न रही।

शाम हो गई। अब वह फ़ोन से बोर हो गई थी। उसे अपना जन्मदिन याद आया। उसके सारे दोस्त अपने-अपने घर जा चुके थे। वह दुखी हो गई। उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ। कुछ देर बाद उसे गली में गीता दिखाई दी। उसने उसे मनाया। फिर दोनों बाक़ी दोस्तों के घर पहुँच गए। सलमा ने अपने दोस्तों से माफ़ी माँगी। फिर धूम-धाम से जन्मदिन मनाया।

लेखन : दलीप सिंह (मण्डी)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

साफ़-सफ़ाई

पूरे गाँव में एक ही स्कूल था। गाँव के सारे बच्चे उसी स्कूल में पढ़ने जाते थे। स्कूल में बालक व बालिकाएँ दोनों पढ़ते थे। दोनों के लिए अलग-अलग शौचालय भी बने थे। उनमें केवल एक ही उपयोग लायक़ था। इसकी वजह से शौचालय ज़्यादा गंदा रहने लगा। आसपास बदबू भी फैलने लगी।

एक दिन स्कूल में नई शिक्षिका आईं। उन्होंने दूसरे शौचालय को साफ़ करने को कहा। कोई तैयार नहीं हुआ। शिक्षिका ख़ुद शौचालय की सफ़ाई करने लगीं। उन्हें देखकर कुछ बच्चे भी उनकी मदद करने लगे। सभी ने मिलकर शौचालय को साफ़ कर दिया। स्कूल के आसपास भी सफ़ाई की। बच्चे और शिक्षिका ने मिलकर कुछ पौधे भी लगाए।

धीरे-धीरे स्कूल के चारों ओर ख़ुशबू फैल गई। सभी बच्चों को सफ़ाई का महत्त्व समझ में आ गया।

लेखन : ख़ुशहाल नेगी (कुल्लू)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

एक पहाड़ी पर बैल

एक पहाड़ी पर बैल घास चर रहा था। पहाड़ी के नीचे गधा भी घास चर रहा था। बैल ने आवाज़ लगाई - भाई, कुछ बात है, ज़रा इधर आना। गधा बोला - वहीं से सुना दो। बैल ने कहा - कहानी बड़ी अच्छी है, आकर सुनो। गधा थोड़ा ऊपर चढ़ा, फिर बोला - अब बोलो। बैल बोला - क्या भाई नज़दीक नहीं आ सकते? गधा पहाड़ी के ऊपर आया और बोला - बताओ, क्या ख़ास बात है? बैल ने कहा - और नज़दीक आओ। गधा बैल के और नज़दीक पहुँच गया और बोला - अब जल्दी से बताओ क्या ख़ास बात है। बैल ने गधे को देखा और बोला - मैं अकेले घास चरचर कर ऊब गया हूँ, आओ साथ - साथ घास चरते हैं। यह सुनते ही गधे की हँसी फूट पड़ी। फिर दोनों साथ- साथ घास चरने लग गए।

लेखन : गिरधारी लाल शर्मा (ऊना)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

गाड़ी नंबर 108

दोपहर का समय था। एक किसान खेत में हल चला रहा था। हल चलाते-चलाते बैल थक चुका था। किसान ने बैलों को चारा खाने के लिए छोड़ दिया। वह ख़ुद भी खाना खाने लगा। खाने के बाद वह पेड़ के नीचे आराम करने लगा। अचानक उसके पाँव में तेज़ दर्द हुआ। तभी उसने एक साँप को अपने पास से जाते देखा। वह समझ गया कि साँप ने उसे काटा है। किसान ने समझदारी से काम लिया। उसने तुरंत अपनी टाँग को एक रस्सी से बाँधा। उसने अपने मोबाइल से 108 नम्बर पर फ़ोन किया। थोड़ी ही देर में वहाँ गाड़ी पहुँच गई। वे लोग किसान को उपचार के लिए अस्पताल में ले गए। अस्पताल में डाक्टर ने उसका उपचार किया। वह ठीक हो गया। समय से 108 नंबर की गाड़ी आने से किसान की जान बच गई।

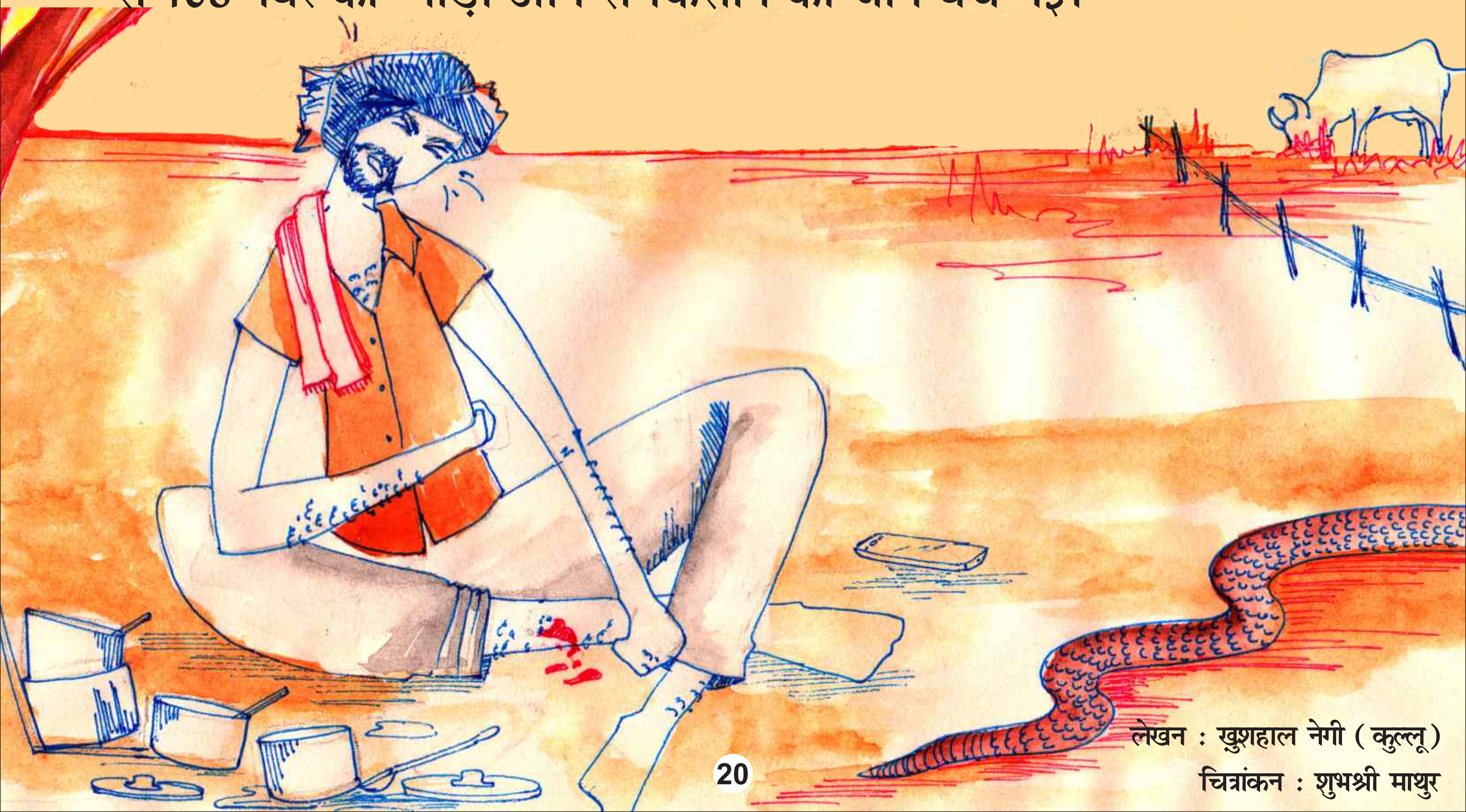

लेखन : ख़ुशहाल नेगी (कुल्लू)

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

धुएँ ने बचाई जान

यह घटना है बिलासपुर के एक छोटे से गाँव की। इस गाँव में एक सरकारी स्कूल था। गाँव के सभी बच्चे इसी स्कूल में पढ़ने जाते थे। लता और कमलेश भी इसी गाँव में रहते थे। वे स्कूल में खाना बनाने का काम करते थे। वे रोज़ाना बच्चों का खाना बनाते। खाना बनाकर वे घर लौट जाते।

दोपहर का समय था। दोनों खाना बनाकर घर लौट रहे थे। उन्होंने एक बच्चे को पेड़ पर पत्थर फेंकते हुए देखा। पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। देखते ही देखते मधुमक्खियाँ चारों तरफ़ फैल गईं। वे दोनों उस बच्चे के साथ स्कूल की तरफ़ भागे। वे 'बचाओ बचाओ' चिल्लाने लगे।

आवाज़ सुनकर एक शिक्षक बाहर निकले। उन्होंने तुरंत कोने में जमा सूखे पत्तों में आग लगा दी। चारों ओर धुआँ फैलने लगा। धुएँ से मधुमक्खियाँ दूर भागने लगीं। मधुमक्खियों को भागता देखकर उनकी जान में जान आई।

लेखन : धर्म सिंह (घुमारवीं, बिलासपुर)

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

लालच

बस चलाते हुए रमनदीप की नज़र सड़क पर पड़ी। सड़क के किनारे एक बैग पड़ा था। उसने बस रोक दी और चुपके से बैग उठा लिया। जल्दी से बस को स्टैंड में लगाया और घर पहुँच गया। उसने दरवाजा बंद किया और जल्दी से बैग खोला। बैग में एक छोटी-सी पोटली थी। उसने झट से पोटली भी खोली। पोटली में एक छोटा-सा डिब्बा था। डिब्बे पर ताला लगा था। वह तुरंत हथौड़ी ले आया। एक ही कोशिश में ताला टूट गया। लेकिन यह क्या, उस डिब्बे में एक और डिब्बी! डिब्बी को देखकर रमनदीप की आँखे चमक उठीं। पूरे जोश में उसने डिब्बी खोली। डिब्बी में लाल कपड़े में लिपटा हुआ काग़ज़ का एक टुकड़ा था। लगता है इसमें किसी ख़ज़ाने का नक्शा है - रमनदीप ने ऐसा सोचा। उसने काग़ज़ का टुकड़ा खोला। उसका मुँह खुला का खुला रह गया। उसमें लिखा था - क्यों बच्चू, बन गए न उल्लू! लालच बुरी बला है।

लेखन : प्रथम
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

हरिया मेरा दोस्त

अम्मी हाशिमा के पीछे-पीछे चल रही थीं। आज वह जानना चाहती थीं कि हाशिमा का दोस्त हरिया कौन है। लेकिन यह क्या! हाशिमा जामुन के पेड़ पर चढ़ गई। अम्मी को देखकर हाशिमा ने कहा – अम्मी आप! यहाँ! अम्मी ने पूछा – तुम तो हरिया के पास खेलने जा रही थी! इस पेड़ पर चढ़कर क्या कर रही हो?

हाशिमा ने कहा – यही तो हरिया है। अम्मी ने चौंकते हुए कहा – पेड़! इसका नाम हरिया है? यह पेड़ तुम्हारा दोस्त है? हाशिमा एक डाल पर झूलते हुए बोली – हाँ माँ, यही है मेरा दोस्त। मैं इस पर कहीं भी चढ़ जाती हूँ। जामुन तोड़कर खाती हूँ। यह कभी मुझसे लड़ता नहीं है। मैं इसे परेशान करती हूँ तब भी मेरे साथ खेलता रहता है।

अम्मी कुछ देर सोचती रहीं। फिर वह भी हरिया के साथ खेलने लगीं।

लेखन : चन्द्रमोहन चमोली मनू
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

प्यारी सुषमा

सुषमा चौथी कक्षा में पढ़ती थी। वह अपनी कक्षा में सबसे बड़ी थी। पढ़ाई-लिखाई में उसका मन नहीं लगता था। वह खेलने-कूदने में सबसे आगे थी। शिक्षक हमेशा उसे डाँटते रहते। एक दिन सभी बच्चे पिकनिक पर गए। सुषमा भी उनके साथ थी। सभी बच्चों ने पिकनिक पर ख़ूब मस्ती की। सबको भूख लगने लगी। सभी बच्चे खाने की तैयारी में लग गए। सुषमा खाना परोसने लगी। तभी राहुल ने उससे पूछा - सुषमा तुम क्या कर रही हो? तुम भी खा लो। सुषमा ने कहा - मैं भी साथ खाऊँगी लेकिन पहले खाना परोस देती हूँ। यह सुनकर पास बैठे शिक्षक की आँखें नम हो गईं। वे सोचने लगे कि जिस लड़की को वह इतना डाँटते-डपटते हैं, वह तो बड़ी समझदार है।

लेखन : दलीप सिंह (मण्डी)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

पत्थर का मोल

एक कुम्हार था। मिट्टी खोदते समय उसे एक पत्थर मिला। उसने वह पत्थर उठा लिया। उसने उसे रस्सी से बाँधकर गधे के गले में डाल दिया। कुम्हार जब गधे के साथ जा रहा था, तब एक जौहरी ने उन्हें देखा। जौहरी ने कुम्हार से कहा – भई! यह पत्थर मुझे दे दो। मैं इसके सौ रुपये दूँगा। कुम्हार ने सोचा शायद यह महँगा है, उसने जौहरी से कहा – मैं इसे एक सौ पचास रुपये में बेचूँगा। जौहरी तैयार नहीं हुआ। कुम्हार भी राज़ी नहीं हुआ। कुम्हार आगे चल पड़ा। आगे जाकर उसे दूसरा जौहरी मिला। उसने पत्थर को दो सौ रुपये में ख़रीद लिया। कुछ दिन बीत गए। एक दिन, उसकी मुलाक़ात पहले जौहरी से हुई। जौहरी ने पत्थर के बारे में पूछा – कुम्हार ने सारी बात बता दी। सारी बात सुनकर पहला जौहरी बोला – अरे मूर्ख, वह पत्थर नहीं हीरा था। तुमने हज़ारों का हीरा दो सौ रुपये में बेच दिया। कुम्हार ने कहा – मूर्ख मैं नहीं, आप हैं। आपने हीरा पहचान लिया था फिर भी नहीं ख़रीदा।

लेखन : प्रकाश चन्द्र भारद्वाज (हमीरपुर)
चित्रांकन : शुभश्री माथुर

आलसी तेज़ू

तेज़ू राम बहुत ही आलसी था। अपने नाम से बिल्कुल अलग। सुबह देर तक सोता रहता। कोई काम नहीं करता। एक दिन कुछ लड़कों को शरारत सूझी। उन्होंने तेज़ू को एक किल्टे (पीठ पर टाँगी जाने वाली टोकरी) में बैठाया। उन्होंने टोकरी को चादर से ढक दिया। टोकरी को डंडे से बाँध दिया। लड़के टोकरी उठाकर गाँव की तरफ़ चल दिए। घूम-घूम कर उन्होंने गाँव वालों को बताया - टोकरी में बाबा हैं। बाबा से सवाल करो तो वे जवाब देते हैं। लोग तेज़ू से सवाल करते। तेज़ू सिर्फ़ हाँ या ना में जवाब देता। लोग ख़ुश हो जाते। दूसरे दिन फिर से तेज़ू को लड़के घुमाने ले गए । इस बार लड़कों ने गाँव वालों से कहा- आज आप लोग अपनी-अपनी ग़लती बताएँ। एक आदमी ने बताया - मैंने तेज़ू की भैंस का दूध चुराकर बेचा है। एक औरत बोली - मैं हर रोज़ तेज़ू के खेतों से अपने पशु के लिए घास लाती हूँ। तीसरे ने कहा - मैं तेज़ू के बग़ीचे से फल तोड़कर बाज़ार में बेचता हूँ। हम चाहते हैं कि तेज़ू इसी तरह आलसी बना रहे। तेज़ू यह सब सुनकर बहुत दुखी हुआ। वह अपनी ग़लतियों पर पछता रहा था। रात भर उसे ठीक से नींद नहीं आई। अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा। वह अपने खेतों में काम करने लगा। सब लोग उसे देखकर हैरान थे।

लेखन : दलीप सिंह (मण्डी)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

धन बड़ा या बुद्धि

सोनू और मनोज बड़े अच्छे दोस्त थे। एक दिन दोनों में बहस होने लगी कि धन बड़ा है या बुद्धि बड़ी? बहस बहुत बढ़ गई। दोनों फ़ैसले के लिए राजा के पास पहुँचे। राजा ने दोनों के सिर काटने का आदेश दे दिया। यह फ़ैसला सुनकर वे हैरान रह गए। दोनों अपनी जान बचाने के बारे में सोचने लगे। मनोज बोला – अब अपने धन से अपनी जान बचा लो। सोनू बोला – लगता नहीं है कि मैं अपने धन से अपनी जान बचा पाऊँगा, लेकिन अपनी बुद्धि से तुम हमें बचा सकते हो। मनोज

बोला – कोशिश करता हूँ, अगर बच गए तो अपना आधा धन मुझे दोगे? सोनू तैयार हो गया। मनोज ने राजा से कहा – महाराज, आप हमारे सिर काट देंगे तो हमें स्वर्ग में जगह मिलेगी क्योंकि हम निर्दोष हैं। पर दुःख इस बात का है कि सज़ा देने के कारण आप पाप के भागीदार होंगे। राजा को मनोज का तर्क सही लगा। राजा ने उनकी सज़ा माफ़ कर दी।

लेखन : धर्म सिंह (घुमारवीं, बिलासपुर)

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

बहुत पहले की बात है

बहुत पुरानी बात है। कुत्ते, बिल्लियाँ और चूहे दोस्त थे। वे सब मिलजुल कर रहते थे। एक बार कुत्तों ने घूमने जाने की योजना बनाई। कुछ कागज़ात बिल्लियों के हवाले करके वे घूमने निकल पड़े।

बिल्लियाँ महीनों तक उनके कागज़ात की देख-भाल करती रहीं। अब वे थक गई थीं। उन्होंने अपनी बैठक बुलाई। बैठक में देख भाल की ज़िम्मेदारी चूहों को दी गई। चूहों ने भी बहुत दिनों तक कागज़ात की रखवाली की। सर्दी का मौसम आया। चूहों के बच्चे सर्दी से काँपने लगे। चूहों ने अपनी बैठक बुलाई। ठण्ड से बचने के लिए उन्होंने ज़रूरी कागज़ात को जला दिया। इस तरह चूहों ने अपने बच्चों की जान बचा ली। कई महीनों बाद कुत्ते अपने घर वापिस लौटे। बिल्लियों ने उनका स्वागत किया। कुत्तों ने बिल्लियों से अपनी अमानत वापिस माँगी। एक बिल्ली दौड़कर चूहों के पास गई। उसे देखकर सभी चूहे बिल में घुस गए। दूसरी बिल्ली गई वह भी वापिस नहीं आई। इस तरह सारी बिल्लियाँ वहाँ पहुँच गईं। कुत्तों ने उनका पीछा किया। सारी बिल्लियाँ पेड़ पर चढ़ गईं। चूहे बिल में घुसे रहे। तब से कुत्ते बिल्लियों के पीछे भागते रहते हैं और बिल्लियाँ चूहों को दौड़ाती रहती हैं।

लेखन : गिरधारी लाल शर्मा (ऊना)

चित्रांकन : शुभश्री माथुर

मेहनती गिलहरी

गिलहरी के शरीर पर धारियाँ बनी हैं। जानते हैं इसके पीछे की कहानी? ऐसा माना जाता है कि रावण सीता को जब उठा कर लंका ले गया। सीता को बचाने के लिए रामजी ने सेना तैयार की। सेना में ज़्यादातर बंदर और भालू थे। सेना समुद्र के उपर पुल बना रही थी। हनुमान पत्थर उठा-उठा कर समुद्र में फेंक रहे थे। वहीं छोटी-सी गिलहरी भी थी। वह भी पुल बनाने में जुटी हुई थी। वह ख़ुद को पानी से भिगोती और रेत पर लोटपोट होती। फिर शरीर को पुल पर जाकर झाड़ देती। ऐसा करते समय वह बार-बार हनुमान से टकरा जाती। हनुमान को ग़ुस्सा आ गया वह बोले - छटंकी, यह तेरे बस का काम नहीं है। गिलहरी को बुरा लगा। वह एक कोने में जाकर रोने लगी। गिलहरी को रोता देखा तो रामजी ने उसे गोद में उठा लिया। वह गिलहरी की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले - नन्हीं गिलहरी तू घबरा मत। तेरा नाम भी पुल बनाने वालों में लिखा जाएगा। कहा जाता है कि तभी से गिलहरी की पीठ पर धारियों के निशान हैं।

लेखन : प्रकाश चन्द्र भारद्वाज (हमीरपुर)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर

कौन है अच्छा?

एक दिन नानी ने बच्चों को कहानी सुनाई – गुरु जी के तीन शिष्य थे। वे शिक्षा पूरी करने के बाद घर वापिस जा रहे थे। गुरुजी तीनों को एक-एक किलो गेहूँ प्रसाद में देते हुए बोले – इसे अपने- अपने ढंग से प्रयोग करना। घर पहुँच कर पहला शिष्य बोला – हम इसका दलिया बनाएँगे। दूसरा बोला – हम इस गेहूँ का आधा भाग पक्षियों को खिलाएँगे और आधे का आटा बना लेंगे। तीसरा शिष्य घर पहुंच कर अपनी पत्नी से बोला – हम इसे खेत में बो देते हैं।

तीसरे के खेत में अच्छी फ़सल हुई। कुछ समय बाद शिष्य ने कहा – कल गुरुजी का हाल पूछने चलते हैं और दो किलो गेहूँ भेंट भी दे आएँगे। कुछ गेहूँ पक्षियों को डाल देंगे और बाक़ी खाने के लिए रख लेंगे।

नानी ने बच्चों से पूछा – बताओ तीनों में कौन अच्छा है?

लेखन : प्रकाश चन्द्र भारद्वाज (हमीरपुर)
चित्रांकन : मित्रारुन हल्दर